आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2407 • उदयपुर, मंगलवार 27 जुलाई, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

दुःखी दवे परिवार तक पहुंची नारायण सेवा की मदद
संस्थान क्षतिग्रस्त कूल्हे के ऑपरेशन में करेगा मदद

इसी वर्ष जनवरी में मोड़ी ग्राम के एक वाहन चालक धनंजय जी के सड़क हादसे में क्षतिग्रस्त कूल्हे के ऑपरेशन का जिम्मा नारायण सेवा संस्थान उठायेगा। यह जानकारी संस्थान अध्यक्ष प्रशान्त जी अग्रवाल ने दी। इस सम्बंध में संस्थान के जनसम्पर्क विभाग की टीम मोड़ी ग्राम गई और हादसे की जानकारी ली।

टीम ने परिवार को राशन व वस्त्र आदि की तात्कालिक सहायता भी प्रदान की। राहत दल में विष्णु जी शर्मा हितैषी, भगवान प्रसाद जी गौड़ व संस्थान के हॉस्पीटल अधीक्षक प्रवीण सिंह जी शामिल थे। धनंजय जी दवे की स्थिति और उपचार को लेकर उदयपुर में चिकित्सकों से लाइव सम्पर्क किया गया। जिन्होंने अहमदाबाद व उदयपुर के एक अस्पताल में चले इलाज व एक्सरे रिपोर्ट देखने के बाद बताया कि दवे के फेफड़े काफी कमजोर हैं और बलगम जमा हुआ हैं। जब तक बलगम नहीं निकल जाता और फेफड़े साफ नहीं हो जाते तब तक एनेस्थिसिया नही दिया जा सकता और ऑपरेशन के लिए एनेस्थिसिया देना आवश्यक हैं। उन्होंने जमा बलगम को निकालने के लिए परामर्श दिया ताकि जल्द से जल्द ऑपरेशन कर उन्हें फिर से पांवों पर खड़ा किया जा सके। धनंजय जी अपने परिवार का इकलौता कमाने वाला व्यक्ति है। उनके पिछले 6 माह से बेड पर पड़ जाने से मां, पत्नी, दो बेटियों व एक बेटे वाले परिवार पर संकट का घना कोहरा छा गया। घर में जो भी पैसा था वह अस्पतालों में खर्च हो गया। बावजूद इसके ऑपरेशन होना अभी बाकी है। जबकि दो वक्त की रोटी का जुगाड़ भी मुश्किल हो गया है। नारायण सेवा संस्थान ने ऑपरेशन व बच्चों की शिक्षा में भी मदद का भरोसा दिया है।

अनाथ 6 भाई–बहन की मदद को पहुंची नारायण सेवा

नारायण सेवा संस्थान, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सहयोग से माता–पिता की दुर्घटना में मौत से अनाथ हुए 6 बच्चों तक बड़गांव तहसील के कालबेलिया कच्ची बस्ती में राशन और मदद लेकर पहुंची। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि पीड़ित मानवता की सेवा में सदैव तत्पर निदेशक वंदना जी अग्रवाल की टीम ने 6 अनाथ भाई–बहनों की विभिन्न साइज के कपड़े और मासिक खाद्य सामग्री जिसमें आटा, चावल, दाल, शक्कर, तेल, मसाले आदि थे, भेंट किए गए। साथ ही बच्चों एवं पड़ोसियों को विश्वास दिलाया कि भविष्य में भोजन, राशन, वस्त्रादि की हरसंभव मदद की जाएगी।

राशन और राहत संग बांधा तिरपाल

वल्लभनगर तहसील के बाठरड़ा खुर्द में उन दो अनाथ बच्चों की मदद के लिए नारायण सेवा पहुंची, जो पिछले कुछ समय से अभाव और तनाव की जिन्दगी जी रहे हैं। बाठरड़ा खुर्द के भाट समाज के दो बच्चों यमुना (11) व गणेश (8) के पिता का निधन हो चुका है, जबकि मां–पिता की मौत के कुछ ही दिनों बाद बच्चों को भाग्य के भरोसे छोड़ अन्यत्र नाते चली गई। बच्चे बिन रोटी और पढ़ाई के जैसे–तैसे जीवन काट रहे थे।

संस्थान निदेशक वंदना अग्रवाल ने 30 जून को बच्चों के घर पहुंचकर पर्याप्त मात्रा में राशन, कपड़े व पोषाहार प्रदान किया। केलूपोश घर की छत के वर्षा में टपकने की आशंका के चलते बड़ा तिरपाल भी डलवाया। उल्लेखनीय है पिता के मरने और मां के नाते जाने के बाद इनका पालन–पौषण कर रही दादी की भी गत दिनों मौत हो गई थी। बच्चों को उनके शिक्षण में भी मदद करने के लिए संस्थान ने आश्वस्त किया। बाठेरड़ा खुर्द की सरपंच इन्द्रकुंवर के अनुसार इन बच्चों के लिए सरकारी खर्च पर पक्का मकान बनवाया जाएगा।

कैंसर पीड़ित मासूम राधिका को आर्थिक मदद

बांसवाड़ा जिले के टामटिया गांव की बालिका के कैन्सर रोग के उपचार के लिए नारायण सेवा संस्थान ने आर्थिक सम्बल प्रदान किया है। अध्यक्ष प्रशान्त जी अग्रवाल ने बताया कि आदिवासी श्रमिक धन्ना जी कटारा की 6 साल की बेटी राधिका यहां गीताजंली हॉस्पीटल में भर्ती है। दिन–ब–दिन गिरते स्वास्थ्य के चलते जांच पर कैन्सर होना पाया गया। संस्थान निदेशक वंदना जी अग्रवाल हॉस्पीटल गई और आर्थिक सहयोग देते हुए उपचार होने तक राशन, भोजन, एम्बुलेंस व वस्त्रादि की व्यवस्था का भी भरोसा दिलाया।

कृत्रिम अंग पाकर खिल उठे चेहरे

हादसों में हाथ–पैर खो देने वाले भाई–बहनों को कृत्रिम हाथ–पैर लगाने के लिए देश के विभिन्न शहरों में जून 2021 में शिविर आयोजित किए गए। इससे पूर्व इन दिव्यांग बन्धु–बहनों के कृत्रिम अंग लगाने के लिए मैजरमेंट शिविर लगाए गए थे। जून माह में कुल 277 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग व 113 कैलिपर लगाए गए।

भोपाल– मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल मे नारायण सेवा संस्थान तथा भोपाल उत्सव समिति के संयुक्त तत्वावधान में हाथ–पैर विहीन दिव्यांगों के लिए त्रिदिवसीय (25 से 27 जून) कृत्रिम अंग वितरण शिविर लगाया गया। हादसों के कारण लम्बे समय से रूकी जिंदगयां फिर से रफ्तार पकड़ेगी, इसकी खुशी दिव्यांगों के चेहरों पर साफ दिखाई दे रही थी। शामला हिल्स स्थित माणस भवन मे सम्पन्न शिविर में 213 दिव्यांगों को कृत्रिम हाथ–पैर लगाए गए, जबकि जन्मजात 72 दिव्यांगों को कैलिपर्स लगाए गए। जो लोग हादसों में अपने पांव खो चुके वे बिना किसी किसी सहारे चलने लगे और जिन्होंने हाथ–पैर खोए वे कृत्रिम हाथों से लिखने और निवाला मुंह तक ले जाने लगे। प्रथम दिन के मुख्य अतिथि जिला कलेक्टर अविनाश लवानिया थे, जबकि अध्यक्षता आई.जी.पी. भोपाल श्री इरशाद वली जी ने की। दूसरे दिन शिविर में मुख्य अतिथि राज्य के शिक्षामंत्री श्री विश्वास जी सारंग थे। अध्यक्षता समाजसेवी श्री अशोक कुमार जी ने की। शिविर के तीसरे और अन्तिम दिन आयोजित समापन समारोह की मुख्य अतिथि सांसद साध्वी प्रज्ञा जी ठाकुर मुख्य अतिथि थी। अध्यक्षता मानस भवन के अध्यक्ष श्री रघुनन्दन जी शर्मा ने की। अतिथियों का स्वागत भोपाल उत्सव मेला समिति के संयोजक श्री सुनील जी जैनाविन एवं संस्थान की भोपाल शाखा के संयोजक श्री विष्णुशरण जी सक्सेना ने किया।

संस्थान के टेक्निशियन सर्वश्री भंवरसिंह जी, नाथुसिंह जी व सुशील कुमार जी ने पी एंड ओ सुश्री रोली जी शर्मा के निर्देशन में कृत्रिम अंग व कैलिपर लगाए। तीनों दिन के शिविर में जिन गणमान्य लोगों ने अपनी उपस्थिति दी उनमें शामिल थे–सर्वश्री शैलेन्द्र जी निगम, शारदा जी राठौड़, अजय जी गुप्ता, ओ. पी. जी बंसल, कृष्णमोहन जी सोनी एवं वीरेन्द्र जी जैन। संचालन संस्थान के वरिष्ठ साधक श्री अखिलेश जी अग्निहोत्री ने किया। व्यवस्था में लोगर जी डांगी, फतहलाल जी व मुन्ना सिंह जी ने सहयोग किया।

राशन व छातों का वितरण

श्रद्धा और आस्था के विशेष पर्व निर्जला एकादशी पर 21 जून को नारायण सेवा संस्थान एवं 21 आश्रमों में गरीब, असहाय, विधवाओं और जरूरतमंदों को शर्बत पिलाकर छाते और राशन सामग्री बांटी जरूरतमंदों को 110 छाते और 101 रोजगार विहीन कामगारों को राशन दिया गया। इस मौके पर निदेशक वंदना जी अग्रवाल और पलक जी अग्रवाल ने पर्व के महात्म्य पर प्रकाश डालते हुए गरीब बच्चों को नए वस्त्र बिस्किट, फल व स्कूलों को स्टेशनरी व महिलाओं को साड़ियों का वितरण किया । शिविर का संयोजन दल्लाराम जी पटेल ने किया।

मकराना – भारत विकास परिषद के सहयोग से नागौर जिले के मकराना गांव स्थित संदड भवन में 16 जून को आयोजित शिविर में 23 दिव्यांगों के कृत्रिम अंग लगाए गए, जबकि 9 को कैलिपर दिए गए। शिविर के मुख्य अतिथि क्षेत्रीय विधायक श्री रूपाराम जी मुरावतिया थे। अध्यक्षता पार्षद श्री विनोद कुमार जी सोलंकी ने की। विशिष्ट अतिथि भारत विकास परिषद के सवश्री श्री रमेश जी छापरवाल, सर्वेश्वर जी मानधनिया, कैलाश चन्द्र जी काबरा, बालमुकुंद जी मुंदड़ा, कमल किशोर जी लड्ढ़ा तथा जुगलकिशोर जी थे। कृत्रिम अंग लगाने का कार्य टेक्नीशियन श्री भंवर सिंह ने किया। संस्थान साधक श्री हरिप्रसाद जी लड्ढ़ा ने शिविर का संयोजन किया।

सुनेल– राजस्थान के झालावाड़ जिले की पंचायत समिति सुनेल में श्री घनश्याम जी पाटीदार के सहयोग से 18 जून को कृत्रिम अंग एवं कैलिपर्स वितरण शिविर सम्पन्न हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि पंचायत समिति प्रधान श्रीमती सीता जी भील व अन्य अतिथियों ने 33 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग व कैलिपर्स वितरित किए। अध्यक्षता पूर्व प्रधान श्री कन्हैयालाल जी ने की। विशिष्ट अतिथि सहयोगकर्ता समाजसेवी श्री घनश्याम जी पाटीदार थे। टेक्नीशियन श्री भंवरसिंह जी के अनुसार 20 दिव्यांगों को कृत्रिम हाथ–पैर लगाए गए, जबकि 13 लोगों को कैलिपर्स दिए गए।

सम्पादकीय

व्यक्ति जब जन्म लेता है तभी परमात्मा उसमें समस्त शक्तियों का निरूपण कर देते हैं। ये शक्तियां हरेक में समान रूप से विद्यमान रहती हैं। कुछ लोग इन शक्तियों को जागृत करके अपने जीवन को उन्नत कर लेते हैं, मानवता को श्रृंगारित कर लेते हैं तो कई लोग उन शक्तियों को सुषुप्तावस्था में रखे–रखे ही जीवन गुजार देते हैं।

परमात्मा हमसे यही अपेक्षा करता है कि हम अपने जीवन को उन्नत बना सकें। एक सच्चे मानव की तरह अपना जीवन खड़ा कर सकें। इस कार्य के लिए अनेक प्रकार के संसाधन भी प्रभु ने हमें प्रदान किये हैं। उनका सदुपयोग ही समुत्कर्ष की राह है। जैसे अज्ञानरूपी अंधकार से मुक्त होने के लिये ज्ञान के प्रकाश की व्यवस्था है। जैसे रोगरूपी शाप से विजय के लिए निरामयता का वरदान है। कटुता की निषेधात्मकता को हराने के लिए भाईचारे की सकारात्मकता का अस्त्र है। अविश्वास को जड़मूल से नष्ट करने के लिए विश्वास व प्रेम के शस्त्र हैं।

कुछ काव्यमय

जनजीवन उन्नत बने,
इसका करें उपाय।
सबको सब कुछ मिल सके,
विकसे सहज सुभाय।
शिक्षा का दीपक जले,
फैले ज्ञान प्रकाश।
आपस में मिलकर करें,
अंधकार का नाश।।
सभी निरामय हों यहाँ,
कभी न व्यापे रोग।
स्वस्थ और बलवान हों,
इस धरती के लोग।।
भाईचारा खूब हो,
आपस में हो प्यार।
जियें सभी सद्भाव से,
स्नेहिल हो व्यवहार।।
विश्वासों की डोर हो,
लम्बी औं मजबूत।
ताना बाना प्रेम का,
अपनेपन का सूत।।

- वरदीचन्द राव

कोविड-19 के नियम

- भीड़-भाड़ वाली जगहों पर जाने से बचें।
- सार्वजनिक स्थानों पर ना थूकें।
- बार-बार अपने हाथों को धोएं।
- बाहर जाते समय मास्क जरुर लगाऐ।
- अपनी आंख, नाक या मुंह को न छुएं।
- जुकाम और खांसी होने पर मास्क पहनें।
- छींकते समय नाक और मुंह को ढकें।

अपनों से अपनी बात

साधक की परीक्षा

एक साधक का सम्पूर्ण जीवन परमात्मा के चरणों में समर्पित था। उनका विचार था कि ईश्वर के निरन्तर चिंतन से जीवन अमृतमय हो जाता है। संसार की सभी वस्तुएँ नश्वर और क्षण भंगुर हैं। इनमें अनुरक्ति कष्ट ही पहुँचाएगी।

एक दिन जब साधक एकांत में साधना कर रहे थे, उनके एक मित्र वहाँ पहुंचे।

वे यह सोच कर आए थे कि आज साधक मित्र की परीक्षा ली जाए। उन्होंने कुछ इस तरह की भाव–भंगिमा बनाई जैसे किसी बात को लेकर वे बहुत चिंताग्रस्त हों। साधक ने पूछा, ''मित्र बहुत चिंतित दिखाई दे रहे हो। क्या बात है?'' मित्र बोले, ''कुछ मत पूछो! शायद हम लोगों के भाग्य में ऐसा बुरा दिन देखना ही लिखा था। क्या आपको मालूम नहीं हुआ कि आज रात सम्पूर्ण

संसार काल के ग्रास में समा जाएगा। यह सुनकर साधक आनंद से झूम उठे।

उन्होंने हंसकर कहा, ''मित्र! यह तो बड़ी अच्छी बात बताई। इससे बढ़कर दूसरा कोई शुभ समाचार हो ही क्या सकता है। जीवन के विषय में कुछ भी तय करने वाले हम तो नहीं हैं। इसका रहना या नष्ट होना उस अ.श्य शक्ति के हाथ में है। फिर हम क्यों इसे लेकर चिंतित हों।

मनुष्य इसीलिए तो इतने कष्ट झेलता है, क्योंकि वह स्वयं को ही नियंता मान बैठता है। इसलिए जब तक जीवन है, तब तक हम प्रसन्न होकर जीएं और दूसरों को भी सुखी बनाने का प्रयास करें। साधकके मुख से ये शब्द सुनकर मित्र उन्हें देखता रह गया। साधक ने आगे कहा, 'यह भविष्यवाणी तुम नहीं सुनाते, तो मृत्यु का कोई निश्चित दिन और समय नहीं था कि वह कब आएगी, अब तो निश्चित हो गया। अब तो आखिरी समय के लिए स्वयं को तैयार कर लो।

परोपकार और सत्कर्मों का आयोजन और परमात्मा का स्मरण, यही तो मृत्यु को सहज स्वीकार करने के योग्य बनाते हैं। परोपकार और सत्कर्मों का आयोजन और परमात्मा का स्मरण, यही तो मृत्यु को सहज स्वीकार करने के योग्य बनाते हैं, जिसके पास ये हैं उन्हें मृत्यु का भय कैसा ?

–कैलाश 'मानव'

कर्म के प्रति समर्पण

राजस्थान के प्रसिद्ध जैन साहित्यकार थे– टोडरमल। उत्कृष्ट लेखन के धनी इस कलमकार में अपने काम के प्रति अद्भुत लगन थी। वे जिस भी विषय पर लिखना तय कर लेते थे, उसे एक बार हाथ में लेने पर पूरा करके ही छोड़ते थे। एक समय वे अपने ग्रंथ' मोक्षमार्ग' पर काम कर रहे थे। यह विख्यात ग्रंथ है जो आज भी मानव मात्र के लिए मार्गदर्शक है। जब टोडरमल के मन–मस्तिष्क में 'मोक्षमार्ग' लेखन का विचार आया तो सबसे पहले उन्होंने अनेक लोगों से विषय सामग्री के रूप में जीवन के प्रति उनके .ष्टिकोण से सम्बंधित विचार

जानने आरम्भ किए। इसके बाद टोडरमल लेखन में इतने मगन हो गए कि उन्हें रात और दिन का पता ही नहीं चला और न खाने–पीने की ही सुध रही। घर के लोग इस दौरान उनका पूरा ध्यान रखते। एक दिन टोडरमल माँ से बोले, ''माँ! आज सब्जी में नमक नहीं है। लगता है आप नमक डालना भूल गईं।'' उनकी बात सुनकर माँ मुस्कराते हुए बोली, ''बेटा! लगता है आज तुमने अपने ग्रंथ लेखन का कार्य पूरा कर लिया है ? '' माँ की बात सुनकर टोडरमल चौंके और हैरानी से बोले,''हाँ माँ, मैंने अपना ग्रंथ पूरा कर लिया, पर ये आपने कैसे जाना ?'' माँ ने जवाब दिया, ''नमक तो मैं तुम्हारे भोजन में पिछले छह महीने से डाल ही नहीं रही थी, किन्तु उसका अभाव तुम्हें आज पहली बार महसूस हुआ, इसी से मैंने जाना कि ग्रंथ का लेखन कार्य पूर्ण हो गया है। जब तक तुम्हारे मस्तिष्क में पुस्तक की विषय–सामग्री थी, तब तक नमक की कम–ज्यादा मात्रा पर ध्यान देने के लिए तुम्हारे पास समय नहीं था। अब जब वह जगह खाली हो गई, तो इन्द्रियों के रसों ने उसे भरना शुरू कर दिया। दरअसल, कार्य के प्रति लगन हो तो कार्य निर्धारित समय में और उत्कृष्टता के साथ पूर्ण होता है। कार्य के प्रति लगन हो तो कार्य निर्धारित समय में और उत्कृष्टता के साथ पूर्ण होता है। इसलिए जब भी हम कोई कार्य अपने हाथ में लें तो उसे पूरी तन्मयता के साथ करें।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

आई.पी.ओ. के रूप में उसकी नियुक्ति झालावाड़ में हो गई। अब उसका कार्य इन्सपेक्शन का हो गया। उसे महीने में 25 दिन निरीक्षण पर ही रहना पड़ता था, इस कारण अलग से कार्यालय की जरूरत नहीं होती थी। जहां रहता था वहीं कुर्सी–टेबल लगाकर कार्यालय बना दिया गया। सहायता के लिये एक अर्दली अलग से मिल गया। कैलाश के अन्तर्गत 123 पोस्ट ऑफिस थे। प्रत्येक पोस्ट ऑफिस का साल में एक बार निरीक्षण करना अनिवार्य था। इन पोस्ट ऑफिसों में नियुक्तियां आदि करने की जिम्मेदारी भी उसी की थी।

कैलाश को अपने कार्यक्षेत्र के विभिन्न पोस्ट ऑफिसों के बारे में शिकायतें मिलती रहती थी मगर पास ही के एक गांव के पोस्ट ऑफिस की शिकायतें अत्यधिक थी। विभाग से भी उसको निर्देश मिले कि इस पोस्ट ऑफिस का निरीक्षण करो। डाकखानों में आने वाली डाक को नियमित करने मेल ओवरसियर भी होते थे। इस क्षेत्र का मेल ओवरसियर उस पोस्ट ऑफिस और वहां के प्रभारी के बारे में अच्छी जानकारी रखता था। इसने कैलाश को मना किया कि वहां जाना उचित नहीं है, वह खतरनाक क्षेत्र है। आपके पहले जो इन्सपेक्टर थे वे भी इस पोस्ट ऑफिस के कागज यहीं मंगवा कर खाना पूर्ति कर लेते थे।

मेल ओवरसियर की बात सुनकर कैलाश का भी मन हुआ कि वह भी यही करें और कागजात मंगवा कर इन्सपेक्शन की औपचारिकताएं पूरी कर ले मगर उसका दिल नहीं माना। उसने जी कड़ा कर ओवरसियर को कहा कि –जाना तो पड़ेगा, आखिर यही मेरी ड्यूटी है। **अंश - 70**

विटामिन और कैल्शियम से दूर होगा गर्दन का दर्द

गर्दन में होने वाले दर्द को आमतौर पर लोग नजरअंदाज करते हैं लेकिन कई बार वह दर्द गंभीर होने पर पूरी जीवनशैली को प्रभावित कर देता है। पिछले कई सालों से सवाईकल स्पॉडिंलाइसिस के रोगियों की सख्या में लगातार वृद्धि हो रही है।

डॉ. आरपी जायसवाल बताते हैं कि गर्दन की तकलीफ को फौरन मेडिसन और फिजियोथेरेपी की मदद से दूर कराने की कोशिश करनी चाहिए। लेटलतीफी से परेशानी बढ़ सकती है। इसक अलावा खाने में कैल्शियम और विटामिन डी की मात्रा अधिक लेनी चाहिए।

इन बातों का रखें ख्याल तो कम होगी परेशानी

- पूरी नींद नहीं लेना, ऊंचे तकिया पर सोना, लेटकर पढ़ना, टीवी देखना और घंटों कंप्यूटर पर काम करने से बढ़ता है स्पॉडिंलाइसिस।
- लंबे समय से निरतंर गाड़ियों का परिचालन करते रहने से गर्दन की समस्या बढ़ रही है।
- गलत ढंग से शारीरिक श्रम करना, अधिक बोझ उठाने से भी परेशानी आती है।
- दुर्घटना के दौरान गंभीर चोट या हड्डियों में खराबी आने से स्पांडिलाइसिस की बीमारी बढ़ती है।
- खाने में कैल्शियम और विटामिन डी का सेवन करने से गर्दन के रोग की समस्या दूर होती है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

कैसा दृश्य? ऐसी पीड़ा, ऐसा कष्ट। भवरसिंह जी राव साहब के घुटने का ऑपरेशन किया गया। अन्दर पानी भर गया था। बहुत पीड़ा, ये दर्द दूर करने की गोली, ये इन्जेक्शन गोलियाँ तो काम ही नहीं आई। इन्जेक्शन लगाया गया सब के, लोग कराह रहे थे। बुद्ध भगवान की कथा पढ़ी थी। किसी ज्योतिषिजी ने कहा था बुद्ध भगवान को, बुद्ध भगवान के लिये उनके पिता को, इनको दुःखी को मत देखने देना। कोई दुःखी इनके सामने ना जावे, अन्यथा ये साधु हो जायेंगे। घर छोड़ देंगे। पिताजी ने, राजा ने ऐसी व्यवस्था की कि कोई दुःखी न आ जावे। फिर भी बाहर निकले, एक दुःखी आ गये– वृद्ध। गर्दन झुक रही है, हाथ कांप रहे हैं, पैर भी सीधे नहीं पड़ते। बुद्ध भगवान चौंक उठे, इतना दुःख? क्या मेरे को भी ऐसा दुःखी होना पड़ेगा? मेरे भी पांव ऐसे काँपेंगे, हाथ थरथराएंगे? आगे बढ़ते हैं, एक शवयात्रा निकल रही है। रामनाम सत्य है, सत्य के साथ गत है। ये क्या हो गया महाराज? मृत्यु हो गई, मर गये। आत्मा, बस निकल गयी। परदेशी रवाना हो गया। सेठजी के कान में कलम टंगी रही। वकील साहब की पेशी पड़ी रही। जेन्टलमैंन के हाथ की घड़ी लगी रही, और परदेशी रवाना हो गया। ऐसा घर छोड़ दिया यशोधरा, राहुल और सत्य की खोज करने निकल गये। ये राग मिटे, द्वेष मिटे, घृणा मिटे, नफरत मिटे। ये लालच बुरी बला छूटे। काम, वात, लोभ, अपारा। अधिक कामुक होना, अधिक कामनाएं रखना वात हो गया। अंगुलियाँ मुड़ गई, हाथ मुड़ गये। टेढ़े– मेढ़े हो गये।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 197 (कैलाश 'मानव')

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023